माइक

बस्ती के छोर पर जहाँ बस – स्टैन्ड बना था, उसी के बगल मे एक टूटा – फूटा, खस्ता-हाल प्रतीक्षालय था – सामने लगे हुऐ बोर्ड के मान दों दीमक खाऐ हुऐ खंबे अवशेष के रूप में खडे थे। बोर्ड का तख्ता शायद किसी ज्यादा अच्छे काम के लिऐ ले जाया चुका था। बुकिंग – आफिस का छोटा सा कमरा बस – स्टैन्ड के दूसरे छोर पर बन गया था। प्रतीक्षा करने वालों, और करवाने वालों के बीच यह दूरी जरूरी थी। प्रतीक्षालय के खपरे सार्वजनिक रूप से सुलभ थे, परन्तु सीमेन्ट की टूटी – फूटी बैन्चें अपनी जगह अटल थी। बस का इंतिजार करता यात्री कभी भी सिर उठाकर खपरों से झांकते आस्मान को देख सकता था, और दार्शनिक भाव से सोच सकता था कि आखिर उसे ' जाना ' कहाँ है ?

शाम के धुंधलके में पालनपुर की आखिरी बस जा चुकी थी। अब देर रात तक सिर्फ दो एक्सप्रेस बसें इस मोटर – स्टैन्ड से गुजरना था। अपनी जगमग दुनियाँ अपने में समेटे हुऐ उन्हें रूकते रूकते , हार्न बजाकर आगे बढ जाना था। रात हो चली थी।प्रतीक्षालय मे राधे पनवाडी की दुकान से लाकर एक गैसबत्ती रख दी गई थी। बब्बन पहलवान अपने चेलों के साथ बैन्च पर बैठे थे। मीटिंग् शुरू थी; और जो भी आता , पहलवान उसकी पीठ पर थाप जमाकर, उसे एक तरफ बैठने का इशारा कर देते।

जब आठ दस लोग इक्कठा हो गये तो पहलवान ने दांत खोदते कहा, '' इलेक्शन के चार दिन बचे हैं। आज ये आखरी मीटिंग है।इसके बाद जो मुलाकात होगी, वह चलते फिरते होगी। जैसे तै हुआ है, सबकेअपने ठौर पर निकल देना है। कोई कमी नहीं रहना चाहिए, समझे ? भाई जी को हमने खड़ा कियां , नाक का सवाल हमारा है। इस ऐरिया में अपना खंबा गड़ा है , उसपर झण्डा भी अपना ही झूलेगा, क्या समझे ? फकीरे क्या खबर है ?

फकीरे ने अटकते हुऐ , कहा '' पैलवान ..... वो गौरी भैया 'उधर ' मिले गये। जब थाले में छेद हो, तो नमक बिखरेगा ही ! मगर हजार – दो हजार वोट से ज्यादा ना खींच पाऐंगे। अपना भी पुख्ता इंतिजाम है। वो गुरू, नोरट – पानी हो जाता तो ..... बात ये है, अपोजिट वालों के पोस्टर, झन्डे और उनकी आम सभा थू करवाने का डबल – रेट लगता है – छोकरे बोलते है, डबल – डेन्जर है।''

बब्बन आप खो बैठे, '' हड्डी तोड के हाथ मे ना दे दी तैने गौरी भइया की ? तो कमबख्त .....''

अचानक वे रूके, और प्रतीक्षालय के नीम – अंधेरे में बैठे चेहरों पर नजर घुमाई। उन्हें याद आ गया, कि उनका अखाडा बदल गया है। नये अखाडे में हाथ तोडे नहीं, जोडे जाते है। दंगल सामने होता है , फैसला पीठ पीछे। वे हंस दिये, '' प्रजातंत्र है। गौरी भैया स्वतंत्र है। उन्हें आत्मा की आवाज सुनाई दे गयी होगी। ईश्वर उनकी सहायता करें। अरे फकीरे, मै रुक्का लिखे देता हूँ, पैसे मिल जाऐंगे।मुख्तयार सिंह , तेरा मोर्चा कैसा है ?

मुख्तयार सिंह , ने जोश में जवाब दियामुख्तयार सिंह , '' काम चाक चौबंद है चाचा। अपने तीसेक आदमी हैं – दिन देख रहे हैं ना रात। एक केस कर बैठे ससुरे , जरा भैयाजी से नवापुर थाने में ,फोन करवा देना तो।''

बब्बन ने सिर पकड लिया, '' उफ् ! अरे तुम लुटिया न डुबो देना। इलैक्शन लड रहे हो या कोरट् – कचहरी ? जब मामला हो ही गया था, तो वहीं समेट देते। अधकचरा मामला ही थाने पहुंचता है। सुलह – सफाई कर लो ना हो तो ! टाइम बडा नाजुक है।''

Scanned by CamScanner

मुख्तयार खजिकर बोला , '' ये तुम बोल रहे हो चाचा ? तुम – बब्बन पहलवान – सिरपुर – केसरी ?''

बब्बन हंस पडे, '' हम नही बेटा, भतिर जो माइक फिट है ना , वो बोल रहा है। राजनीति का ढाई – आखर सीख रहे हैं , तुम्हारे बब्बन – गुरू। .... अरे याद आया , माइक की बात पर ... काहे हो छुडनवा, चुप कैसे बैठे हो भाई ? अरे, इनने रंग जमा दिया है। हमारी बस्ती की छुट्टन सान्उड – सर्विस और हमारे माइक – मास्टर तो छा गये है, पूरे क्षेत्र पर।

छुट्टन अभी तक चुपचाप बैठा इन लोगों की बातें सुन रहा था। अचानक चरैककर बरेलर, '' हाँ पहलवान, अब जो सेवा हो रही है , सो कर ही रहे है। रात देख रहे हैं न दिन। '' बब्बन हंस पडे , '' नहीं रे बिखा। वो नहीं कर रहा। अरे तूने तो आसमान मे तम्बू तान दिया है। छा गया है तू। पूत के गांव पालने मे है बेटा। अपनी बस्ती का लडका जो किराये पर लाउडस्पीकर, माइक, और ग्रामोफोन देता है , वो परदेशी नेता है, कौन जानता था। सारे ऐरिया मे तेरे टेप बज रहे है। जब तू जीप और माइक मे स्पीकर फिट करेगा।सात गांवो के बाजार में भजमा जुराता है, तो पब्लिक की वो – क्या कहते है – नानी मर जाती है। डटे रहो प्यारे – बम्म महादेव, दन्त गनेस। देखना, भैयाजी इलैक्शन के बाद तेरा गोदनामा भरके, तुझे झण्डे की तरह फहरा देगें। '' वे अपने ही मजाक पर ठहाका मार के हंस दिये, और सबको अपने साथ हंसना पडा।

छुट्टन झेंप गया , फिर धीरे से बोला , '' वो क्या है उस्ताद कि महीना भर से दुकान मे ताला डला है। आपके हुम पर निकल तो दिये , पर फाकाकशी की नौबत है। कुछ पैमेन्ट हो जाता तो .....''

बब्बन ने कहा काटी, '' पेमेन्ट ?कौन तेरा जोरू जाता है ? तू फिर घर का लडका है रे ! ले पचास का रूक्का – चाय पीने के लिये, कल परसो फिर मांग लिजो। भैयाजी जीत जाऐं तो मत कहो, कैसेट – कंपनी खुलवा दें तेरे नाम। सब बंधे है डोरी से। छुट्टन , तू बब्बन की पूंछ पकडे है, बब्बन भैयाजी की , भैयाजी उनकी ..... वो उनकी ..... और वे , उनकी .....। सफेद हाथी सरग जाऐगा, तो कुनबे को लेकर ही जाऐगा ना ?

छुट्टन ने श्रद्धाभाव से सिर हिला दिया। बब्बन धीरे से बोले, '' परसों हनकपुर में विशाल, जंगी जबरदस्त आम सभा है। राजधानी से दो नंबर के नेताजी आ रहे है। इलैक्शन की आखिरी जबडजंग आम – सभा समझों। क्या बोलते हैं – बिजली कडकती है। भैयाजी की जीत पक्की समझो, उनको सभा के बाद – जनता दोनों हाथों से वोट डाल आऐगी। बक्से कम पडेंगें। हाँ ...तो ननकू – चौधरी तो नहीं मान रहे थे। मगर हमने मना लिया। स्टेज पर लाउडस्पीकर – माइक। इंतिजाम हमारे छुट्टन का। नये खून को आगे बढाना है या नहीं ? अपना पेटी, बाजा, डब्बा, चोंगा टंच रखना। हवा से आऐंगे , और फूर्र से उड जाऐगे। अनका आधा घंटे का प्रोग्राम है। अरे तूने छुट्टन साउड – सर्विस वाली प्लेट लिखवा ली , या नहीं ? ''

छुट्टन से उत्साह से सिर हिला दिया। कुछ देर और इधर – उधर की बातें हुई। मदन, बल्लू, जगनाथ, इदरीस वैगरा से रिपोर्टें ली गई , और निर्देश दिये गये। इसके आद मीटिंग खत्म हो गई।

तीसरे दिन सुबह नौ बजे टनकपुर में नेताजी के भाषण की पूरी तैयारी थी। भैयाजी दौड कर स्टेज पर सारी व्यवस्था देख रहे थे। बब्बन और ननकू चौधरी जैसे उनके कई दायें – बायें हाथ थे। फिर उन हाथों की उंगलियाँ थी, फिर उन उंगलियों के नाखून थे। किसी को दम लेने की फुरसत नही थी। हजारों की तादाद मे जनता जमा हो रही थी। झुन्ड के झुन्ड , मुन्ड ही मुन्ड। श्रोताओं का सागर लहरा रहा थी। मोटर, ठेला, ट्रेक्टर, ट्राली, मेटा डोर सबके पहिये लगातार घुम रहे थे। छुट्टन स्टेज के एक कोने से दूसरे तक दौड रहा था। बीच – बीच पर वह माइक पर उंगलियों से ट्क –ट्क करता, और करता, '' हैलो टेस्टिंग ... हैलो ... वन

Scanned by CamScanner

...टू थ्री – फोर ..... फाइव ..... माइक टेस्टिंग ..... आप लोग कृपया शांती के साथ रहिये ..... नेताजी पधारने ही वाले हैं .... फाइव ... फोर ....थ्री..... टू..... वन् ..... हैलो – हैलो ! '' यही बात सब लोग श्रेणी – बद्ध रूप से दुहरा रहे थे – भैयाजी तक। सामने स्कूल के हाकी – ग्राउन्ड में हैलीकाप्टर उतरने वाला था। सुरक्षा की दृष्टि से , इसके गोल – पोस्ट उडना दिये गये थे।

ठीक ग्यारह बजे आकाश में घरघराहट हुई। हजारों सिर उपर ताकने लगे । देश भक्ति के गाने बजने लगे। हैलीकॉपर ग्राउन्ड में उतर गया। नेताजी कार में बैठकर सभा – स्थल की तरफ बढें।

भीड में एक आदमी ने बगल वाले से पूछा, '' ये यहाँ खाना भी खाऐंगे ? ''दूसरे ने इत्मीनान से कहा , '' नहीं, सिर्फ पचाऐंगे।''

हार – माला, फूल – गुलदस्ते, शिकवे – शिकायत संवेदन– प्रतिवेदन, सब पांच मिनिट में निपट गये। वे बार बार घडी देख रहे थे। औपचारिकता रूप से कुछ शब्द भैया जी ने कहे। फिर माइक पर नेताजी आ गये। जनता मंत्र – मुग्ध तो हो ही चुकी थी। तालियों की गडगडाहट को ध्वनि से वातावरण गूंज उठा।

ने ताजी बोलते – बोलते जोश में आते गये। देश, राष्ट्र, विश्व, प्रान्त, क्षेत्र, समस्याऐं, उत्थान, प्रगति, संघर्ष, परिवर्तन, ज्योति, प्रकाश, आलोक, युवा वर्ग, महिलाऐं, बेरोजगारी, अशिप्ता, सपने, सच्चाइयाऐं, वादे, प्रण, प्रतिज्ञा, ... शब्द जैसे तडित – चालक बनते जा रहे थे। वे स्वर्णिम भविष्य की खुशबू बिखेर रहे थे। पब्लिक को जैसे सांप सूंघ गया था। नेताजी पूरे जोशो – खरोश में हवा में दोनों हाथ लहराते, घुमाते, हिलाते, बोलते चले जा रहे थे .... अचानक ..... भाषण के चरम उत्कर्ष पर माइक बंद हो गया।

एक मिनिट के अंश में बहुत कुछ हो गया। नेताजी ने बार – बार परेशानी से माइक को ठोंका। घबराये हुऐ छुट्टन ने बैटरी, एम्पलीफायर, वायर, माइक, स्पीकर तक कई दौडे लगा दीं। भैयाजी और उनसे लगे – बंधे सारे आदमी पसीने से तर – बतर हो गये। जनता में अफरा – तफरी मच गई। नेताजी बौखला रहे थे । हवा में हाथ लहरा रहे थे। ऐसा लगता, जैसे उनके हाथ आसमान की ओर तारे तोडने के लिये बढ रहे, या वे लई सुबह को बांहे पसारे आवाज दे रहे या – वी – फार विक्टरी बना रहे हैं, परंतु आवाज गुम थी। समय बढ रहा था, और लग रहा था कि धमा हुआ है। जनता का शोर – गुल बढता जा रहा था। हर कोई खूनी आँखो से स्टेज पर छुट्टन को घूर रहा था, जो मारे डर के अधमरा सा माइक को झिंझोड रहा था।

पूरे जोर से हूटिंग शुरू हो गई हजारों – हजारों सुर उस एक आवाज के लिए तडप रहे थे, जो उन्हे चुप करा देती। नेता जी के सब्र का बांध टूट गया। पे भैयाजी पर बरस पडे, ''यही है आपकी व्यवस्था ? इसी दम पर बुलाया था मुझे ? पूरे प्रांत मे यही मिट्टी – पलीत होनी थी मेरी ? जीत लिये आप चुनाव , मेरी शुभकामनाऐं है, नमस्कार !''

उन्होने आव देखा न ताव, मंच से उतरे। गाडी में बैठे , हैलीकाप्टर की ओर बढ लिये।भैयाजी रूंआ से स्वर में गिडगिडाते रहे,'' रूकिये सर, सुनिये सर..... अभी ठीक हुआ जाता है..... जनता आपकी दर्शनाभिलाषी है सर... हमें यूं छोडकर ना जाइये।''

हैलीकाप्टर फुर्र से उड गया।

भयंकर कोलाहल के बीच एक लडका , दूसरे से बोला, '' और लेओ। चिडिया चुग गई खेत।'' भैयाजी गुस्से में पाूव पटकते मंच तक आये क अपने आंसू पोंछे, और अपने पीछे दौडते शिष्यों को अधर में लटकाकर, कार में बैठकर चल दिये।

Scanned by CamScanner

हजारों की भीड में लोग जा रहे थे। , उछल – कूद रहे थे , चीख – चिल्ला रहे थे, और स्टेज पर होने वाले नाटक को , बाइस्कोप के जमाने की मूक – फिल्म की तरह देख कर, मजे ले रहे थे। छुट्टन अभी भी पागलों की तरह माइक में उलझा था। स्टेज के कोने पर खडे ननकू चौधरी ने घृणा से थूकते हुऐ, बब्बन पहलवान से कहा,'' काहे हो बब्बनवा । ई तुहार छुटवा हई ना , ई गउरी – भइया की डगर पे तो नाहीं चल रही है ? ''

छुट्टन डर और आतंक के मारे रो पडा। अचानक उसके हाथ में तार का एक डोर आ गया ह वह चीख पडा,'' मिल गया। मिल गया। यहीं से टेप उखड गया । वायर निकल गया था। लो अब आ गया .... हैलो टेस्टिंग वन .... टू.... थ्री.... फोर ..... फाइव.... हैलो .... आप लोग शांति के साथ बैठिये ..... माइक – टेस्टिंग .....''

दो छोरों को मिलाकर वायर उमेडते, और उस पर टेप लपेटते छुट्टन, पागलों की तरह चिल्ला रहा था। मारे गुस्से के बब्बन अपने हाथ की माला को मुट्ठी में भीचे, उसके एक– एक फूल को मसलकर फेंकते जा रहे थे, और खून टपकती आंखों से छुट्टन को घूर रहे थे।

छुट्टन बौखलाहट के मारे माइक पर अंट– शंट बक रहा था – वे ही लाइनें, जो उसके बाजार और नुक्कड पर बोलने के लिये याद की थी ... हाँ ! तो भाइयों ! नेताजी अभी कह रहे थे, हमें मुल्क को साकार करना है ... हमें आपसे कहना है .... हमें यह कहना है कि .....''

भयंकर कोलाहल के बीच उसने अपनी गर्दन पर एक शिकंजा महसूस किया। उसे मंच से ढकेल कर जीप की ओर ले जाया गया। बब्बन, ननकू – चौधरी, फकीरे, मुख्तयार, मदन, बिल्लू, जगन्नाथ, इदरीस, सारे परिचित, हूऐ चेहरे, उसे हजार आंखों पाले दैत्य दिखने लगे।

बब्बन उसे जीप में ढकेलते हूणे खुसकुसाऐ,'' तो मुझे देश को आगे बढाना है.....? सुन्दर सपनों को साकार करना है .....? क्यों वे ? तूझे जनता से कहना है ? सब उसे घेरकर जरप में चढ गये। बब्बन का शिकंजा अभी भी उसकी गर्दन पर था। छुट्टन, किसी जिबह होते बकरे की तरह घिघिया रहा था, '' नहीं पहलवान। मुझे कुछ नहीं कहना है..... कुछ नहीं कहना है। जो कहना है , आप ही को कहना है..... जो करना है, आप ही को करना है..... आप ही को करना है..... मैं तो माइक वाला हूँ ..... सिर्फ माइक ..... मेरी क्या औकात .....'' जीप स्टार्ट हो गई।

Scanned by CamScanner